मीपण बंध हे मिध्या वाहे। ६९ इप बस्तचि आहे आहे। त्वंपद ताम म प्राप्त (राग: जोगिया - ताल: केहरवा) म जानम विज्ञास कमलवदनीं हें अमृत भरा। माणिक माणिक मंत्र स्मरा॥धू.॥ द्वैतबुद्धि ही दूर करा। अहंब्रह्म हे नच विसरा।।१।। सकलमताचा पंथ धरा। सर्व सौख्य येईल घरा।।२।। महावाक्य हे मनीं विवरा।